B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY HONS.
PAPER-2
UNIT-4(III)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KR.MISHRA
DATE-31/07/2020

TOPIC:- वाणिज्यवाद का पतन

PART-5

Scanned with CamScanner

॥ वाणिज्यवाद का पतन ॥

18वीं शताब्दी के मध्य में वाणिज्यवाद का पतन प्रारंभ हो चुका था। किसी व्यवस्था अथवा विचारधारा का अपने उत्कर्ष बिन्दु पर पहुँचने के बाद पतन होना निश्चित होता है। इसी प्रकार वाणिज्यवाद का पतन हुआ तथापि इसके पतन के लिए निम्नलिखित कारण माने जाते हैं:—

1. धन को अत्यधिक महत्व (धातुवाद) — वाणिज्यवाद में धन को सर्वाधिक महत्व दिया गया जिसके कारण व्यक्ति एवं राष्ट्र दोनों का मुख्य उद्देश्य धन संचय हो गया। इसके लिए दास व्यापार जैसे अमानवीय कृत्य भी किए गए। इसके अलावा धन संचय की प्रवृत्ति के कारण वाणिज्यवादी व्यवस्था में श्रमिकों का वेतन जीवन-निर्वाह सिद्धान्त पर आधारित था। व्यापारियों द्वारा श्रमिकों का आर्थिक शोषण होने लगा। लोक कल्याण की भावना से मुक्त कोई भी राज्य या व्यवस्था कभी भी स्थायी नहीं हो सकती थी।

2. निरंकुश राजसत्ता : वाणिज्यवाद ने राजसत्ता को अत्यधिक शक्ति संपन्न बना दिया। संपूर्ण सत्ता निरंकुश रूप से राज्य में ही निहित थी। निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी राजाओं ने पग-पग पर अपनी शक्तियों का दुरुपयोग किया। फलस्वरूप इस व्यवस्था के विरुद्ध जनता में असंतोष पनपने लगा और उदारवादी सिद्धान्तों ने इस असंतोष को निरंतर बढ़ावा।

3. कृषि को कम महत्व — वाणिज्यवाद में व्यापार को सर्वाधिक महत्व दिया गया और कृषि को उद्योगों के बाद महत्व दिया गया। इससे कृषि का समुचित विकास नहीं हो पा रहा था किन्तु कृषि पर करों में निरंतर वृद्धि होती जा रही थी। इससे कृषि एवं कृषक दोनों की स्थिति दयनीय होती गयी और जनता में असंतोष बढ़ने लगा। लोगों ने स्पष्टतः और उग्र रूप में वाणिज्यवाद की आलोचना करनी प्रारंभ कर दी।

4. परिवर्तनशीलता का अभाव — बदलती परिस्थितियों में स्थैतिक विचार का टिक पाना असंभव होता है। वाणिज्यवादी विचारों में भी परिस्थितियों के अनुसार संशोधन नहीं हुए अतः गतिशील विश्व में स्थिर वाणिज्यवादी सिद्धान्तों तथा आदर्शों का दीर्घकाल तक बने रहना असंभव था। नई परिस्थितियों में उत्पादन तथा व्यापार से संबंधित अनेक अव्यावहारिक प्रतिबंधों को क्रमशः समाप्त कर दिया गया और मुक्त व्यापार का महत्व बढ़ गया। इस प्रकार वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों तथा आदर्शों का पतन आरंभ हो गया।

वाणिज्यवाद की सीमाएँ

(A) यह संकुचित राष्ट्रीयता के सिद्धांत पर आधारित था जिसमें एक राष्ट्र की वृद्धि तो दूसरे की हानि की भावना शामिल थी।

Scanned with CamScanner

(b) वाणिज्यवाद में लोक कल्याण का कोई स्थान नहीं था।

(c) कृषि के प्रति उदासीनता की नीति बरती गयी।

(d) सोने चांदी को अत्यधिक महत्व दिया गया। उसके संग्रह में नैतिक मूल्यों को भी नजरअंदाज कर दिया गया। आगे चलकर यह स्पष्ट हो गया कि उद्योगधंधों का विकास सोने चांदी की अपेक्षा लोहा-इस्पात-कोयला से अधिक होता है।

(e) आर्थिक क्षेत्र में अत्यधिक हस्तक्षेप के कारण उद्योग-धंधों का समुचित विकास नहीं हो पा रहा था।

Pankaj
31/07/2020

—— × × —— × × ——

Scanned with CamScanner